Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

फ़रवरी/2023 ई

MONTHLY QADIAN

ANSARULLAH

FEBRUARY-2023

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

Date of Publication: 15-02-2023

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

11-12-2022 को सरकारी अधिकारी को World Crisis and the Pathway to Peace भेंट करते हुए श्री शाह महमूद साहिब नाज़िम अंसारुल्लाह ।

23-12-2022 को पटना (बिहार)म श्री शाह महमूद साहिब नाज़िम अंसारुल्लाह ग़रीबों को कम्बल वितरण करते हुए ।

26-01-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह मैलाराम, ज़िला वरंगल (तेलंगाना) आयोजित गणतंत्र दिवस तक़रीब का दृश्य ।

14-01-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह इब्राहीम पूर, ज़िला मुर्शिदाबाद (बंगाल) द्वारा आयोजित पिकनिक का एक दृश्य ।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

The Martyrs in Burkina Faso: Stars of Ahmadiyyat

11 JANUARY 2023

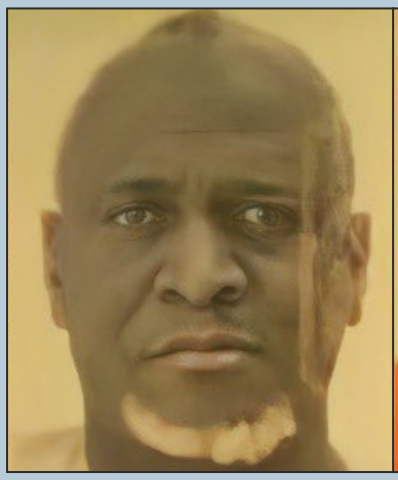

Alhaj Boureima Bidiga

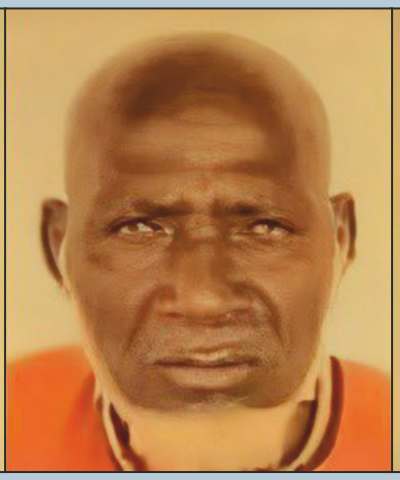

AG Maniel Alhassane

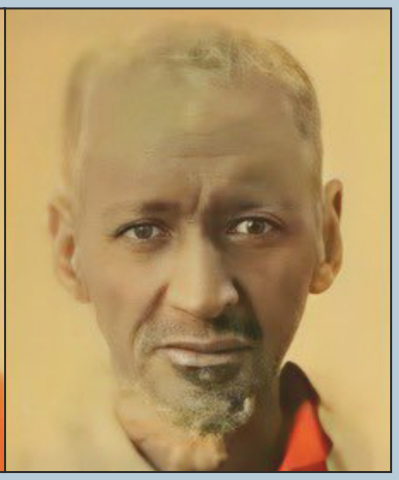

AG Maliel Ousseni

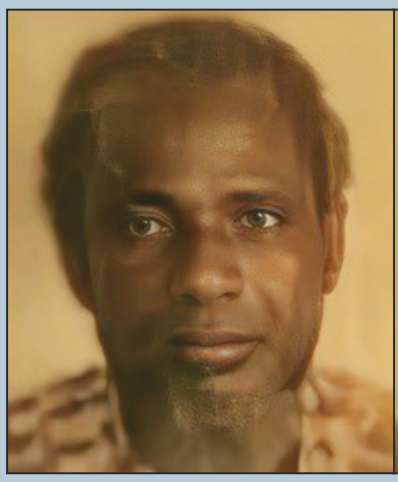

AG Hamidou Abdouramanae

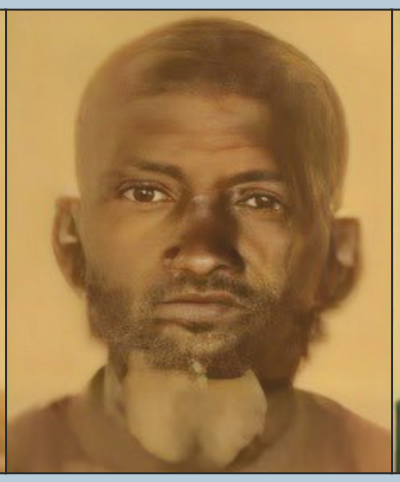

AG Ibhrahim Souley

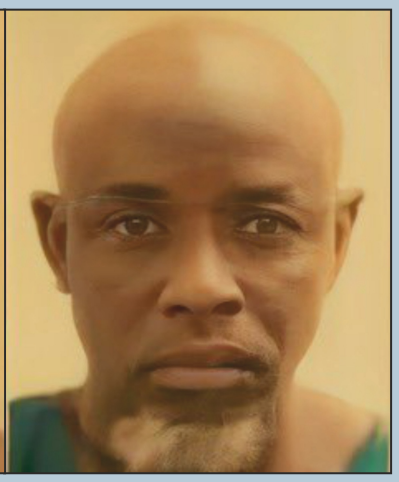

AG Soudeye Ousmane

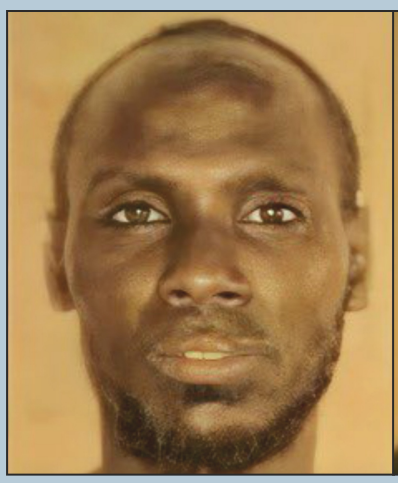

AG Maguel Agali

AG Idrahi Moussa

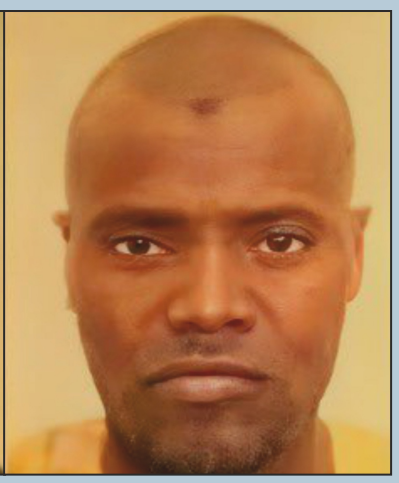

AG Adramane Agouma

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 21	फरवरी 2023	Issue - 02

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय : बुर्कीना फासो में अहमदयित का आरम्भ	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन बुर्कीना फासो में 9 अन्सार की शोकपूर्ण शहादत	6
सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह का अन्सारुल्लाह यू.के से ख़िताब 18 सितम्बर 2022 ई०	8

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ○ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ○ وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ○ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ

(सूरत अलबलद: आयत 2-5)

अनुवाद: सावधान! मैं इस नगर की क़सम खाता हूँ। जबकि तू इस नगर में (एक दिन) उतरने वाला है। और पिता की और जो उसने संतान पैदा की। निस्संदेह हमने मनुष्य को एक लगातार परिश्रम में (लगे रहने के लिए) पैदा किया।

दर्सुल हदीस

عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : يَنْزِلُ اٰعِيْسَى بْنُ مَرْيَمَ اِلَى الْاَرْضِ فَيَتَزَوَّجُ وَيُوْلَدُ لَهٗ وَيَمْكُثُ خَمْسًا وَاَرْبَعِيْنَ سَنَةً ثُمَّ يَمُوْتُ فَيُدْفَنُ مَعِیَ فِیْ قَبْرِیْ فَاَقُوْمُ اَنَا وَعِيْسَى بْنُ مَرْيَمَ فِیْ قَبْرٍ وَاحِدٍ بَيْنَ اَبِیْ بَكْرٍ وَعُمَرَ۔

(मिश्क़ात बाब नज़ूल ईसा)

अनुवाद - हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि अल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मसीह जब नुज़ूल फरमाएंगे तो शादी करेंगे, उनकी बशारतों की वारिस उनकी संतान होगी, (दावा-ए-मामूरियत के बाद) 45 साल के क़रीब रहेंगे फिर फ़ौत होंगे और मेरे साथ मेरी क़ब्र में दफ़न होंगे। अत: मैं और मसीह इब्न मरियम अबू बकर और उमर के बीच एक दिन क़ब्र से उठेंगे (अर्थात रूहानियत और मकसद-ए-बिअसत के लिहाज़ से हम चारों का वजूद मुत्तहिदुल सिफ़ात और एक होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

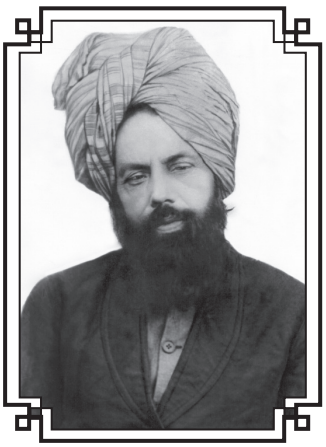

मुस्लेह मऔद रज़ि अल्लाह के बारे में भविष्यवाणी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: महादयालु अतिकृपालु सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने जो प्रत्येक चीज़ पर समर्थयवान है मुझको अपने इल्हाम से संबोधित करके फ़रमाया :-

"मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा। अत: मैंने तेरी वेदनओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) की जगह दी और तेरे सफ़र (होशियारपुर और लुधियाना) को तेरे लिए मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (निकटता) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान (कृपा व उपकार) का निशान दिया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे मिलती है। ऐ मुज़फ़्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वह जो क़बरों में दबे पड़े हैं बाहर आयें और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बर्कतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बुराईयों के साथ भाग जाये। अत: लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। अत: वे विश्वास कर लें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तकज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाये। अत: तुझे खुशखबरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जायेगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा। सुन्दर, पवित्र लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुकद्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आसमान से आता है। उसके साथ फ़ज़ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शिकोह (प्रतापी) और अज़मत (महान) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़्स अर्थात्(मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात् एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके अर्थ समझ में नहीं आए) दुशंब: (सोमवार) है मुबारक दुशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक श्रेष्ठ सुपुत्र)। مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَ الْعُلَاء كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاء मज़्हरूल् अव्वले वल् आख़िरि, मज़्हरूल् हक़्क़े वल् अलाऐ कअन्नल्लाह नज़्ज़ल मिनस्समाइअर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो सच है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वंय आकाश से उतर आया हो। जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर। जिसको खूदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी आत्मा डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत(प्रसिद्ध) पाएगा और क़ौमें (जातियां) उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़्सी नुक़ता आसमान अर्थात् ख़ुदा की तरफ उठाया जायेगा। व काना अम्रम् मक़्ज़ीय्या (और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।

(इश्तिहार 20 फ़रवरी 1886, पृ. 3)

सम्पादकीय बुर्कीना फासो में अहमदयित का आरम्भ

"पेशगोई मुस्लेह मऔद रज़ि" के सम्मुख हर साल 20 फरवरी को जमाअत-ए-अहमदिया में विभिन्न दीनी तथा धार्मिक आयोजन शान तथा शौकत के साथ मनाए जाते हैं। पेशगोई में हज़रत मुस्लेह मऔद रज़ि की एक निशानी यह भी वर्णन हुई कि

"ज़मीन के किनारों तक शौहरत पाएगा और कौमें उस से बरकत पाएँगी।"

अत: 10 मार्च 1944 ई को पेशगोई मुस्लेह मौऊद के ऐलान के लिए लाहौर में आयोजित जलसा में आप ने विभिन्न देशों में पैग़ाम हक़ पहुंचने का वर्णन भी फ़रमाया। नाईजीरिया में जमाअत का पैग़ाम रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ के माध्यम से पहुंचा। 1916 ई में 21 नौजवानों ने बैअत के ख़ुतूत लिखे। फिर 1921 ई में हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान नय्यर साहिब रज़ि मुबल्लिग़ के रूप में यहां आए।

(तारीख़ अहमदियत भाग 2 पृष्ठ 27)

दो विभिन्न स्थानीय भाषाओं के शब्दों से मिलकर बनने वाले नाम "बुर्कीना फासो" का अर्थ है "ख़ुद्दार और ईमानदार लोगों की धरती। "यह नाम 02 अगस्त 1984 ई को रखा गया। इस देश का क्षेत्रफल दो लाख चोहत्तर हज़ार दो सौ किलो मीटर है। इस का पुराना नाम अप्पर वोल्टा था। अप्पर वोल्टा ने 05 अगस्त 1960 ई को फ्रांस से आज़ादी प्राप्त की। इस की सरहदें छ: पड़ोसी देश माली, नाइजर, बेनिन, टोगो घाना और इवरी कोस्ट से मिलती हैं। मौजूदा आबादी 22 मिलियन के क़रीब है। सरकारी भाषा फ्रैंच है जबकि कई स्थानीय भाषाएं भी हैं। राजधानी वागादोगो (Ouagadougou) है।

बुर्कीना फासो में जमाअत अहमदिया की रजिस्ट्रेशन 02 जनवरी 1986 ई को हुई और इस के बाद यहां बाक़ायदा मुबल्लग़ीन आना शुरू हुए। घाना के उत्तरीय क़स्बा वा WA के एक मुख़लिस अहमदी अल्हाज सालिह साहिब जो 1932 ई में अहमदी हुए थे, के माध्यम से अप्पर वोल्टा की धरती पर 1950 ई के दशक के आरम्भिक सालों में अहमदियत का पैग़ाम पहुंचा। इस पैग़ाम पर लब्बैक कहने वाले आरम्भिर मख़लसीन मैं अल्हाज बारू मोदी Barro Mody) साहिब शामिल थे। आपकी बैअत 1951 ई की है। अल्हाज बारू साहिब का सम्बन्ध बुर्कीना फासो के पश्चिमी क्षेत्र ददगो के गांव कूँ ई (Kougny) से था। जहां जमाअत अहमदिया की पहली मस्जिद बनी।

2004 ई में हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने बुर्कीना फ़ास का दौरा फ़रमाया जिस के बाद जमाअत की तरक्कियों का एक नया दौर शुरू हुआ। अमीर जमाअत बुर्कीना फासो के नाम एक ख़त में आप ने इरशाद फ़रमाया

"मुझे पूरा यक़ीन हैकि बुर्कीना फासो की सरज़मीन पर अहमदियत का जो बीज बोया गया है वह शीघ्र स्थायी फल लाएगा। बुर्कीना के लोग हक़ीक़तन बड़े महान लोग हैं और मझे ख़ुशी है कि ख़ुदा ने इन को

अहमदियत के नूर से मुनव्वर किया है। मैंने जो बेदारी जमाअत बुर्कीना फासो के लोगों में देखी है वह हैरत-अंगेज़ है। उम्मीद है अगले दो तीन सालों में इस दौरा के महान परिणाम होंगे और जमाअत तेज़ी से तरक़्क़ी करेगी। इन्शा अल्लाह। (T.9653/1.5.2004)(उद्धरित अलफ़ज़ल ऑनलाइन 29 दिसम्बर 2022 ई पृष्ठ 8)

महदी आबाद ESAKAN गांव के साथ शहर से 45 किलोमीटर की दूरी पर नाईजर की तरफ़ स्थित है। साल 2000 ई मैं यहां बहुत निष्ठावान जमाअत स्थापित हुई थी। जिस साल हुज़ूर अनवर ने बुर्कीना फासो का दौरा किया था उसी साल यहां सोने की बहुत बड़ी खान मिली। इसलिए मईनिंग कंपनी ने क़रीब ही एक नई जगह मकान बना कर दिए और उन लोगों को वहां स्थानांतरित कर दिया। इस नई जगह का नाम हुज़ूर अनवर ने मह्दी आबाद रखा। जहां 11 जनवरी को शहादत की दुखदायक घटना हुई है। हमारी दुआ है कि अल्लाह शहीदों को जन्नत में उच्च स्थान प्रदान करे और उनकी औलाद को भी वफ़ादारी से जमाअत से सम्बन्ध स्थापित रखने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

बुर्कीना फासो में 9 अन्सार की शोकपूर्ण शहादत

दिनांक 11 जनवरी 2023 ई बुधवार महदी आबाद गांव (बुर्कीना फासो) में जमाअत अहमदिया की एक मस्जिद में आंतकवादियों ने हमला कर के 40 (चालीस) से ऊपर के 9 लोगों को शहीद कर दिया। इन्ना लिलाह व इन्ना इलैहि रजिऊन। स्थानीय अहमदी दोस्त नमाज़ इशा के लिए मस्जिद में जमा थे। नमाज़ इशा की अज़ान के समय आठ हथियारों से लेस व्यक्ति अहमदिया मस्जिद में आए और नमाज़ियों को धमकाना शुरू किया।

जमाअत-ए-अहमदिया की आस्था के बारे में प्रश्न होने पर इमाम साहिब ने उन्हें बताया कि हम लोग मुस्लमान हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानने वाले हैं। पूछने पर बताया कि हमारा सम्बन्ध अहमदिया मुस्लिम जमाअत से है। फिर पूछा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित हैं कि फ़ौत हो गए? इमाम साहिब ने कहा हज़रत ईसा अलैहस्सिलाम फ़ौत हो गए हैं। उन्होंने कहा कि नहीं, ईसा जीवित आसमान पर मौजूद हैं और वह वापस आकर दज्जाल को क़त्ल करेंगे। फिर पूछा महदी कौन है? इमाम साहिब ने कहा कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी इमाम महदी और मसीह मौऊद के रूप में आए हैं। उन्होंने कहा अहमदी मुस्लमान नहीं बल्कि पक्के काफ़िर हैं (नऊज़बिल्लाह)

इस के बाद वे लोग इमाम साहिब को मस्जिद के साथ जुड़े अहमदिया सिलाई सैंटर में ले गए जहां हज़रत मसीह मौऊद और ख़ुलफ़ा की तस्वीरों को देखकर प्रश्न किए। इमाम साहिब ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नाम बताए। उन्होंने कहा मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद सच्चे नबी नहीं हैं। (नऊज़ बिल्लाह)

फिर वह इमाम साहिब को लेकर मस्जिद की तरफ़ आए और मस्जिद में मौजूद नमाज़ियों में से बच्चों, नौजवानों और बुज़ुर्गों के अलग अलग ग्रुप बनाए। बड़ी उम्र के 9 लोगों को मस्जिद से बाहर निकाल लिया।

आतंकवादियों ने इमाम इब्राहीम बदगा साहिब से कहा कि वह अहमदियत से इन्कार कर दें जिस पर उन्हें छोड़ दिया जाएगा। इस पर इमाम साहिब ने उत्तर दिया कि मेरा सिर क़लम करना है तो कर दें अहमदियत से इन्कार तो मुम्किन नहीं। इस पर आतंकवादियों ने इमाम साहिब को शहीद कर दिया। इस के बाद एक-एक आदमी से यही मांग की गई कि अहमदियत छोड़ दें लेकिन उत्तर में इन्कार सुनने पर बारी-

बारी भयावह रूप से अन्य नमाज़ियों के सामने फ़ायर कर के शहीद करते गए। न समाप्त होने वाली दृढ़ता का प्रदर्शन करते हुए शहादत के समय समस्त शहीदों ने उच्च स्वर से अल्लाहो अकबर की आवाज़ लगाई।

हथियारबंद लोगों ने मस्जिद में मौजूद समस्त लोगों से कहा कि आप लोग अहमदियत छोड़ दें। हम फिर आएँगे और यदि आप लोगों ने अहमदियत को न छोड़ा या किसी ने यह मस्जिद दोबारा खोलने की कोशिश की तो सबको ख़त्म कर दिया जाएगा। हथियारबंद लोगों ने भय का ऐसा वातावरण उत्पन्न किया था कि जिस स्थान पर शहादतें हुईं, शहीदों की लाशें रात-भर उसी जगह पड़ी रहीं। क्योंकि डर था कि दहश्तगर्द गांव से बाहर नहीं गए और यदि कोई लाशें उठाने गया तो उसे भी मार दिया जाएगा। अत: अगले दिन शहीदों को दफ़न किया गया।

इस घटना पर हम मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत के सदस्य अपने भाईयों की हत्या पर शोक व्यक्त करते हैं और हम उनके प्रियों के दुख में बराबर के शामिल हैं। अल्लाह तआला उन्हें सब्र जमील प्रदान करे और उन शहीदों को अपने साया रहमत में जगह प्रदान फ़रमाए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"परसों बुर्कीना फासो में हमारे 9 अहमदी शहीद कर दिए गए। बड़ी शोकपूर्ण घटना है। इना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। बड़े अत्याचार्पूरण ढंग से उनको शहीद किया गया। उनके ईमान की परीक्षा भी थी जिस पर वे दृढ़ता पूर्वक स्थापित रहे। यह नहीं कि अंधा धुंद फायरिंग करके बल्कि हर एक को बुला बुला के शहीद किया.....अल्लाह तआला उनसे रहम का सुलूक फ़रमाए, इन सब के दर्जात बुलंद करे। आमीन।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 13 जनवरी 2023 ई)

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

प्रत्येक अहमदी प्रत्येक बात का जो समय के ख़लीफ़ा की ओर से कही जा रही है अपने आपको सम्बोधित समझे।

समापन भाषण हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला

तशह्हुद तऊव्वुज़ और सूरह फातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ताआला ने फरमाया कि

"अभी कुछ देर पहले मैंने लज्ना से ख़िताब किया था और उन्हें कुछ बातों की ओर ध्यान दिलाया था। यह बातें केवल औरतों के लिए नहीं हैं बल्कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में जहां इन बातों की ओर ध्यान दिलाया है वहां मर्दों और औरतों दोनों को सम्बोधित कर के ये नेकियां अपनाने और उनकी ओर ध्यान देने के लिए कहा है। हाँ मैंने कुछ उदाहरण औरतों को सामने रखते हुए उनके माहौल के अनुसार दिए हैं लेकिन अधिकतर उदाहरण मर्दों और औरतों दोनों पर लागू होते हैं।

जैसे सच्चाई के उच्च स्तर या इबादतों की ओर ध्यान देना है तो मर्दों को भी यही स्तर स्थापित करने की ज़रूरत है ताकि जहां अपनी दुनिया तथा प्रलोक संवारने वाले बनें वहां अपनी औलाद की तर्बीयत के लिए भी आदर्श बन कर उनकी दुनिया और प्रलोक संवारने का भी माध्यम बनें।

कुछ लोगों की आदत होती है कि नसीहतों का सम्बोधन अपने आपको नहीं समझते और दूसरे के बारे में समझ कर फिर कह देते हैं कि देखा ख़लीफ़-ए-वक़्त ने अमुक़ जमाअत को या जमाअत के अमुक वर्ग को किस तरह सख़्ती से कहा है। वे लोग फिर ये भी आगे से कह देते हैं कि ये लोग तो हैं ही ऐसे, इनका सुधार होना चाहिए था। अपने गिरेबान में ये लोग नहीं झाँकते। हालाँकि चाहिए तो यह कि हर एक अपने आपको उस का सम्बोधित समझे और अपने गिरेबान में झांक कर देखे, अपने आपको देखे कि मैं क्या हूँ।

और यह देखना चाहिए कि जो बातें दूसरों को कही जा रही हैं, किसी भी वर्ग को ख़लीफ़-ए-वक़्त सम्बोधित है और वह इस्लामी शिक्षा के अनुसार कुछ मामलों की तरफ़ ध्यान दिला रहा है तो हम अपनी समीक्षा करें कि क्या हम इस स्तर पर पूरा उतर रहे हैं जो विभिन्न नेकियों के स्थापित करने और उन्हें अपनी ज़िंदगियों का भाग बनाने के स्तर हैं। अत: अगर यह बात समझ आ जाए कि ख़लीफ़-ए-वक़्त किसी भी देश के अहमदियों को कुछ मामलों की ओर ध्यान दिला रहा है या जमाअत के किसी भी वर्ग को विभिन्न नेकी की बातों की ओर ध्यान दिला रहा है तो हम भी अहमदी होने के नाते अपनी समीक्षा करे लें कि क्या हम में ये नेकियां मौजूद हैं जिनकी ओर ध्यान दिलाया जा रहा है या हम में यह कमज़ोरियाँ तो नहीं हैं जिन के छोड़ने की ओर ध्यान दिलाया जा रहा है। अत: अब जबकि टीवी के माध्यम से समस्त दुनिया समपर्क की दृष्टि से एक हो गई है

हर अहमदी हर बात का जो ख़लीफ़-ए-वक़्त की ओर से जमाअत की बेहतरी के लिए कही जा रही है अपने आपको सम्बोधति समझे और इस पर अनुकरण करने की कोशिश करे तो एक इन्क़िलाब है जो हम अपनी हालतों में ला सकते हैं।

अत: पहली बात तो यह है कि जो बातें मैंने लज्ना में की हैं उनसे अन्सार अपने आपको भी सम्बोधित समझें। और जब मर्द और औरत एक हो कर नेकियों को धारण करने और बुराइयों को छोड़ने के लिए कोशिश करेंगे

तो फिर एक इन्क़िलाब होगा जो हम अपने घरों में भी ला सकेंगे, अपनी हालतों में भी ला सकेंगे, अपने बच्चों में भी ला सकेंगे और अपने परिवेश में भी ला सकेंगे।

अत: अन्सारुल्लाह की उम्र को पहुंचे हुए मर्द जो अपनी उम्र की दृष्टि से अपनी सोच की वयस्कता को भी पहुंच चुके हैं उन्हें विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हर नेकी की बात जो जमाअत के किसी भी वर्ग को सम्बोधित कर के की जा रही है उसे हमने न सिर्फ अपने पर लागू करना है बल्कि दूसरों के सामने नमूना बन कर हक़ीक़ी इस्लामी समाज की स्थापना करनी है। इस युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम जो दुनिया के सुधार के लिए और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा के फैलाने के लिए आए थे, जिनको हमने माना ,इसलिए कि अपनी भी सुधार करें और दुनिया को भी इस्लाम की सुन्दर शिक्षा से परिचित करें तो फिर उस के लिए हर नेकी को धारण करने और हर बुराई को बेज़ार हो कर तर्क करने की हमें विशेष कोशिश करनी होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को जो विभिन्न अवसरों पर नसीहतें फ़रमाईं उस के हवाले से भी कुछ बातें आपसे करना चाहूँगा। जैसा कि मैंने कहा कि अन्सारुल्लाह की उम्र के लोग अपनी अक़्ल और तजुर्बे की दृष्टि से इंतिहा को पहुंचे हुए होते हैं, अत: यह बात उनसे यह भी तक़ाज़ा करती है कि वह अपनी दीनी, रुहानी और अख़लाक़ी हालतों के भी उच्च नमूने दिखाएंगे।

अपने जायज़े लें कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मान कर हमने अपने अन्दर क्या तबदीली पैदा की है और दूसरों को इस से क्या फ़ायदा पहुंचा रहे हैं

एक अवसर पर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

"हमारी जमाअत को अल्लाह तआला एक नमूना बनाना चाहता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 9 प्रकाशन 1984 ई)

अत: जमाअत का अक़्ल-ओ-हिक्मत और तजुर्बे के लिहाज़ से जो बेहतर हिस्सा कहला सकता है जैसा कि मैंने कहा वे आप लोग हैं जो अन्सार की उम्र के हैं

अत: इबादतों के स्तर की दृष्टि से भी और उच्च अख़लाक़ और दूसरी नेकियों की दृष्टि से भी अन्सारुल्लाह ही वह तंज़ीम होनी चाहिए जो नमूने क़ायम करने वाली हो और यह उस वक़्त हो सकता है जब इन्सान के दिल में तक़्वा हो, तभी इन्सान का अल्लाह तआला से ताल्लुक़ पैदा होता है, तभी इन्सान की इबादतों के और उच्च अख़लाक़ के स्तर क़ायम होते हैं, तभी एक इन्सान हक़ीक़ी अन्सार में गिना जा सकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस वजह से अपने मानने वालों को बेशुमार जगह बड़े दर्द के साथ तक़्वा पर चलने के बारे में बार-बार नसीहत फ़रमाते रहे क्योंकि तक़्वा एक बुनियादी चीज़ है। अत: एक जगह आप फ़रमाते हैं

"तक़्वा के अतिरिक्त और किसी बात से अल्लाह तआला राज़ी नहीं होता। अल्लाह तआला फ़रमाता है إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ (अलनहल129)" (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 10 प्रकाशन 1984 ई) अवश्य अल्लाह उन लोगों के साथ है जो तक़्वा इख़तियार करते हैं और जो एहसान करने वाले हैं।

अत: हर एक हम में से जायज़ा ले कि किस सीमा तक हम में तक़्वा है और हमारे एहसान करने के क्या मयार हैं। तभी हम हक़ीक़ी अन्सार कहला सकते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वे लोग मुहसेनून में गिने जाते हैं। अत: जब हम यह नारा लगाते हैं कि हम अन्सारुल्लाह हैं, अल्लाह तआला के मददगार हैं, उस के धर्म के मददगार हैं तो फिर यह विशेषता भी पैदा

करनी होगी कि तक़्वा भी हो और मुहसिन भी हम हों।

अल्लाह तआला को हमारी किसी मदद की ज़रूरत नहीं। वह सब ताक़तों का मालिक है। यह उस का एहसान है कि उसने एक निज़ाम क़ायम फ़रमाया और यह निज़ाम बना कर फ़रमाया कि तुम इस निज़ाम का हिस्सा बन जाओ और मेरे धर्म के मददगार बन जाओ तो मैं तुम्हें इस तरह समझूँगा जिस तरह तुम अल्लाह तआला के धर्म के मददगार हो लेकिन यह याद रहे कि मैं अर्थात अल्लाह तआला सिर्फ उन्हें धर्म के मददगार समझूँगा जो तक़्वा को धारण करने वाले हैं और एहसान करने वाले हैं।

तक़्वा क्या है? यही कि अल्लाह तआला की मुहब्बत ,उस का ख़ौफ़ ,उस की ख़शीयत दिल में हो और हर काम करने से पहले यह सोच ले कि अल्लाह तआला मुझे देख रहा है

और इसी तरह मुहसिन वे हैं जो नेक बातों का इल्म रखने वाले और नेकियां करने वाले हैं।

अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं तुम्हें उस वक़्त अपना मददगार समझूँगा जब तुम में तक़्वा होगा और तुम्हारा प्रत्येक कर्म और ख़्याल नेकियों पर आधारित हो और फिर मैं तुम्हारे कामों में बरकत डालूँगा। मैं तुम्हारे साथ खड़ा हूँ। तुम धर्म की सेवा के लिए जो काम भी करोगे इस में सफलता भी प्रदान करूँगा।

अगर अल्लाह तआला का फ़ज़ल न हो तो इन्सान की हैसियत ही क्या है कि यह दावा करे कि मैं अन्सारुल्लाह हूँ, अल्लाह तआला का मददगार हूँ।

हम तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल के बिना एक के बाद दूसरा सांस भी नहीं ले सकते। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं तुम्हें अल्लाह तआला के धर्म का मददगार कबूल करता हूँ और मेरी मदद तुम्हारे साथ होगी शर्त यह है कि तुम तक़्वा पर चलो और नेकियां करने वाले हो। फिर हमारे कामों के जो हम अल्लाह तआला के लिए करते हैं ऐसे भरपूर नतीजे निकलेंगे कि नज़र आएगा कि वास्तव में ये लोग अंसारुल्लाह हैं और इस वजह से अल्लाह तआला भी उनके कामों में असीमित बरकत प्रदान करता है

अत: यह सोच है जो हम में से हर नासिर की होनी चाहिए क्योंकि इस के बिना हमारी बैअत का उद्देश्य ही कोई नहीं रहता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर यह नसीहत फ़रमाई कि :

"हमारी जमाअत के लिए विशेष रूप से तक़्वा (संयम) की ज़रूरत है विशेष रूप से इस ख़्याल से भी कि वह एक ऐसे व्यक्ति से सम्बन्ध रखते हैं और इस के बैअत के सिलसिला में शामिल हैं जिसका दावा मामूरियत का है ताकि वे लोग जो चाहे किसी प्रकार के द्वेषों, या शिर्कों में पड़े हुए थे या कैसे ही दुनिया के चाहवान थे उन समस्त आफ़तों से नजात पाएं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 10 प्रकाशन 1984 ई)

अत: यदि हमारा नारा नहनो अन्सारुल्लाह का है तो अपने नफ़्स को पहले पवित्र करना होगा ताकि फिर उस मसीह मौऊद के सहायक बन कर दुनिया को बुराईयों और शिर्क से पवित्र करें और ख़ुदाए वाहिद के नूर से हृदयों को प्रकाशित करें जिसको अल्लाह तआला ने इस उद्देश्य के लिए अवतरित किया है लेकिन यदि हमारे अपने ही दिल दुनिया की गंदगियों और लालचों में पड़े हुए हैं तो फिर हम दुनिया का किस तरह सुधार कर सकते हैं।

अत: अब युग के मामूर के साथ जुड़ कर अन्सारुल्लाह का वास्तविक कार्य यह है कि दुनिया को एक ख़ुदा के आगे झुकाना और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे तले लाना होगा।

अत: इस के लिए स्वयं हमें अपने अंदर झांकना होगा कि किस किस्म के अंसारुल्लाह हम हैं।

(शेष.....)